• कविता...

अंतरिक्ष की सैर

नभ के तारे कई देखकर
एक दिन बबलू बोला।
अंतरिक्ष की सैर करें मां
ले आ उड़न खटोला॥
कितने प्यारे लगते हैं
ये आसमान के तारे।
कौतूहल पैदा करते हैं
मन में रोज हमारे॥
झिलमिल झिलमिल करते रहते
हर दिन हमें इशारे।
रोज भेज देते हैं हम तक
किरणों के हरकारे॥
कोई ग्रह तो होगा ऐसा
जिस पर होगी बस्ती।
मां,बच्चों के साथ वहां
मैं खूब करूंगा मस्ती॥
वहां नये बच्चों से मिलकर
कितना सुख पाऊंगा।
नये खेल सिखूंगा मैं,
कुछ उनको सिखलाऊंगा॥

■ त्रिलोक सिंह ठकुरेला

• चुटकुला...

अंकल – फ्री टाइम में क्या करते हो?
लड़का – जी फोन चार्ज करता हूं।
अंकल – और फ्री कब होते हो?
लड़का – जब फोन की बैटरी खत्म हो जाती है।

स्टूडेंट– सर अगर राष्ट्रगान और राष्ट्रीय पशु एकसाथ आ जाएं तो क्या करना है। भागना है या सावधान की मुद्रा में खड़े रहना है...
तब से मास्टर जी लंबी छुट्टी लेकर सवाल का जवाब ढूंढने गए हैं...

पप्पू को एक बार मुगलों के सैनिकों ने बेअदबी के जुर्म में पकड़ लिया और उसे अपने बादशाह के पास ले गए।
बादशाह : इसने अपराध किया है तो इसे बंदी बना दिया जाए।
पप्पू : नहीं, नहीं जहां पनाह.. रहम फरमाइए, मुझे बंदा ही रहने दिया जाए!

• जानकारी...

बैंगनी रंग पहनने पर हो जाती थी सजा

रोम में एक ऐसा समय भी था, जब बैंगनी रंग पहनने पर लोगों को जेल हो सकती थी। सिर्फ इतना ही नहीं बल्कि उन्हें मौत की सजा भी सुनाई जा सकती थी। प्राचीन रोम और बाद में एलिजाबेथ इंग्लैंड जैसे शक्तिशाली साम्राज्य में बैंगनी रंग सिर्फ फैशन की पसंद नहीं था, बल्कि यह सत्ता और राज्य नियंत्रण का प्रतीक था। आइए जानते हैं कि क्यों लागू किया गया था यह नियम।

सोने से भी ज्यादा दुर्लभ था बैंगनी रंग -इस बैन के पीछे की वजह यह थी कि बैंगनी रंग बनाने में काफी ज्यादा मुश्किल था। मशहूर टायरियाई बैंगनी रंग भूमध्य सागर में पाए जाने वाले म्यूरेक्स नाम के एक समुद्री घोंघे से निकाला जाता था। इसे बनाना काफी ज्यादा मुश्किल था। आपको बता दें कि एक ग्राम रंग बनाने के लिए लगभग 9000 घोंघे की जरूरत होती थी। यही वजह है कि बैंगनी कपड़ा सोने से भी ज्यादा महंगा हो गया था।

एक रंग, जो सिर्फ सम्राटों के लिए इस्तेमाल होता था- अपनी दुर्लभता और कीमत की वजह से बैंगनी रंग राजघरानों से जुड़ गया था। रोमन साम्राज्य में सिर्फ सम्राट और उसके करीबी परिवार को ही पूरी तरह से बैंगनी कपड़े पहनने की अनुमति थी। रोमन कानून ने आम नागरिकों को बैंगनी कपड़े पहनने से साफ तौर पर मना कर दिया था। अगर कोई इस नियम का उल्लंघन करता था तो इसे सीधे शाही सत्ता को चुनौती देना माना जाता था। कई मामलों में तो यह देशद्रोह के लिए मौत की सजा के लायक था।

सदियों बाद एलिजाबेथ प्रथम के शासनकाल में इंग्लैंड में भी इसी तरह का कानून लाया गया। उनके शासनकाल के दौरान सुम्पट्यूरी कानूनों ने यह तय किया कि लोग पद के आधार पर क्या पहन सकते हैं। बैंगनी रंग शाही परिवार द्वारा इस्तेमाल किया जाता था। इसे पहनने वाले आम नागरिकों पर भारी जुर्माना, संपत्ति जब्त करना या जेल हो सकती थी।

कब खत्म हुआ यह कानून-1856 में इस कानून को खत्म कर दिया गया। दरअसल 18 साल के एक केमिस्ट विलियम हेनरी पर्किन ने मलेरिया का इलाज ढूंढते समय गलती से पहला सिंथेटिक बैंगनी रंग का डाई खोज लिया। इस आविष्कार ने बैंगनी रंग को इतिहास में पहली बार सस्ता और आसानी से मिलने वाला बना दिया। बस इसके बाद यह सभी के लिए उपलब्ध हो गया और कानून ने अपनी ताकत खो दी।

• गोनू झा

चांद की परी और सरगम की उड़ान

हर रात सरगम अपने घर की छत पर खड़ी होकर चाँद को देखा करती। उसकी आँखों में एक अलग ही चमक होती, जैसे वह किसी पुराने दोस्त से बातें कर रही हो। चाँद की दूधिया रोशनी उसके चेहरे पर गिरती तो वह मुस्कुराने लगती। उसे लगता जैसे ये किरणें उसे अपनी ओर खींच रही हों।

दादी-माँ अक्सर उसे चाँद की परी की कहानियाँ सुनाया करती थीं। वे कहतीं – 'चाँद पर एक सुंदर परी रहती है, जो रात में चरखे पर धागा कातती है और उससे अपनी चाँदी जैसी चादर बुनती है और जमीन पर उसके टुकड़े किरणों के रूप में गिरते हैं।' सरगम इन कहानियों को सुनते-सुनते सो जाती, लेकिन उसके मन में हमेशा एक सवाल गूंजता रहता – 'क्या सच में चाँद पर कोई परी रहती है?'

अब जब भी वह चाँद को देर तक निहारती, उसकी चाँदी-सी कोमल रोशनी जैसे उसके दिल में उतर जाती। उसे अपनी दादी-माँ की कहानियाँ याद आ जातीं–

वो कहानियाँ, जिनमें चाँद पर रहने वाली परी बच्चों के मन की बात सुन लेती थी और उनकी हर इच्छा पूरी करती थी।

उसी याद में खोकर वह धीरे-से मुस्कुराती और सोचती, 'अगर सच में कोई रात ऐसी आए, जब वह परी चमकती रोशनी में मेरे सामने उतर आए, तो मैं उससे क्या माँगूँगी?'

क्या वह उससे उड़ने की शक्ति माँगे? या जादुई पंख, जिनसे वह बादलों के ऊपर से दुनिया देख सके?

या फिर कोई ऐसा वरदान, जो उसे अपने सपनों को सच करने की ताकत दे?

इन कल्पनाओं में ही उसका छोटा-सा दिल भर उठता–उत्साह, आश्चर्य और उम्मीद से। उसके लिए चाँद सिर्फ आसमान का एक गोला नहीं था, बल्कि एक दोस्त, एक सुनने वाला, एक ऐसा दरवाजा जिसे खोलकर वह अपने सपनों की दुनिया में पहुँच सकती थी। धीरे-धीरे उसने अपने मन में जवाब खोज लिया।

एक रात जब सरगम नींद में थी, उसने देखा – आकाश शांत था, चाँद बड़ा और चमकीला था। अचानक उसकी रोशनी से एक उजली आकृति उतरने लगी – वो चाँद की परी थी! उसके पंख मोतियों जैसे चमक रहे थे। परी मुस्कुराई और बोली, 'सरगम, मैं जानती हूँ, तू मुझे रोज देखती है और कुछ पूछना चाहती है।'

सरगम ने धीरे से कहा, 'हाँ परी माँ, मुझे उड़ने की शक्ति दे दे। ताकि मैं ऊपर से धरती को देख सकूँ – पहाड़ों, नदियों, जंगलों, तारों को एक साथ।'

परी ने हँसते हुए कहा, 'उड़ना सिर्फ ऊँचाई तक जाना नहीं होता, बच्ची। इसके साथ दिल में सच्चाई, धैर्य, विनम्रता, साहस और करुणा भी होनी चाहिए। अगर तू वादा करे कि कभी किसी का दिल नहीं दुखाएगी, निडरता और हिम्मत का कभी साथ नहीं छोड़ेगी तो मैं तुझे उड़ने की शक्ति दूँगी।'

सरगम ने तुरंत सिर हिला दिया, 'वादा करती हूँ!'

परी ने अपनी चाँदी की छड़ी से सरगम के माथे को छुआ। अचानक सरगम को लगा कि उसका शरीर हल्का हो गया है, जैसे पंख उग आए हों। वह हवा में उठने लगी – ऊपर, और ऊपर!

नीचे उसने देखा – उसका गाँव, खेत, नदी, पेड़ सब खिलौनों जैसे लग रहे थे। रंग-बिरंगी छतें अब छोटे-छोटे डिब्बों जैसी दिख रही थीं। हवा उसके कानों में संगीत की तरह गूँज रही थी – फूँ... फूँ जैसे कोई अदृश्य बांसुरी बजा रहा हो। -जारी

दादी–माँ अक्सर उसे चाँद की परी की कहानियाँ सुनाया करती थीं। वे कहतीं – 'चाँद पर एक सुंदर परी रहती है, जो रात में चरखे पर धागा कातती है और उससे अपनी चाँदी जैसी चादर बुनती है और जमीन पर उसके टुकड़े किरणों के रूप में गिरते हैं।' सरगम इन कहानियों को सुनते–सुनते सो जाती, लेकिन उसके मन में हमेशा एक सवाल गूंजता रहता –

'क्या सच में चाँद पर कोई परी रहती है?'

अब जब भी वह चाँद को देर तक निहारती, उसकी चाँदी–सी कोमल रोशनी जैसे उसके दिल में उतर जाती...

• रोचक...

मछलियां

नींद सिर्फ इंसानों या फिर जमीन पर रहने वाले जानवरों की ही जरूरत नहीं है, बल्कि मछलियों को भी इसकी काफी जरूरत होती है। लेकिन सवाल यह उठता है कि विशाल और खतरनाक समुद्र में आखिर मछलियां कैसे सो पाती हैं। इंसानों के उलट मछलियां गहरी बेहोशी वाली नींद नहीं सोतीं। इसके बजाय वे एक ऐसी स्थिति में चली जाती हैं, जिसे अक्सर एक्टिव रेस्टिंग कहा जाता है। इस दौरान उनका मेटाबॉलिज्म धीमा हो जाता है, शरीर की हरकतें कम हो जाती हैं और प्रतिक्रिया भी कम हो जाती है। लेकिन वह आंशिक रूप से सतर्क रहती हैं। शार्क और टूना जैसी कुछ प्रजातियां आराम करते समय भी तैरना बंद नहीं कर सकती. उनके शरीर को ऑक्सीजन लेने के लिए गलफड़ों पर लगातार पानी के बहाव की जरूरत होती है। यह मछलियां धीरे–धीरे और लगातार तैरते हुए सोती हैं।

• जहरीली सांप...

जब बात सांपों की हो तो ऑस्ट्रेलिया को दुनिया का सबसे खतरनाक देश माना जाता है, यहां 170 से ज्यादा जहरीली सांपों की प्रजातियां पाई जाती हैं। कहा जाता है कि दुनिया के करीब 85 प्रतिशत सबसे घातक सांप यहीं मिलते हैं। यहां का सबसे खतरनाक सांप इनलैंड ताइपन है, जिसे दुनिया का सबसे जहरीला सांप माना जाता है। एक बार काटने पर इसके जहर से कई दर्जन लोगों की जान जा सकती है। इसके अलावा कोस्टल ताइपन और कॉमन डेथ एडर भी यहां पाए जाते हैं, जो पलक झपकते ही हमला कर देते हैं। हालांकि, ज्यादातर सांप इंसानों से बचने की कोशिश करते हैं, फिर भी खतरा हमेशा बना रहता है।